एम.ए हिंदी कार्यक्रम
द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2026 और जनवरी 2027 सत्रों के लिए)

वैकल्पिक पाठ्यक्रम :

मॉडयूल '4' : मध्यकालीन कविता

एम.एच.डी – 21 : मीरा का विशेष अध्ययन
एम.एच.डी – 22 : कबीर का विशेष अध्ययन
एम.एच.डी – 23 : मध्यकालीन कविता –1
एम.एच.डी – 24 : मध्यकालीन कविता –2

सत्रीर्य कार्य

जुलाई –2026 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2027
जनवरी – 2027 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 सितम्बर, 2027

एम.एच.डी –23 : मध्यकालीन कविता –1
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : **MHD–23**
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी–23/2026-2027
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित काव्याशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10× 3=30

(क) पेट कहौं सुन बउचक राजा। ऐपन सान कोंपर साजा ।।
पूरन खाँड सपूरन बोरे। जहवाँ दीसहिं तहबाँ गोरे ।।
जानु सुहारी घिरत पकाये। देखत पान फूल पतराये।।
नाभी कुण्ड जो डुबखी परो। देखतहिं बूढ़ न पावइ तीरो।।
जॉनों अन्त पेट महँ नाही। अंतर क चाँद दीस परछाँहीं ।।

(ख) ऐसा चाहौं राज मैं, जहाँ मिले सबन को अन्न।
छोट बड़ो सभ सम बसैं, रैदास रहे प्रसन्न।।

(ग) राधा जल बिहरति सखियनि सँग।
ग्रीव–प्रजंत नीर मैं ठाढ़ी, छिरकति जल अपनैं अपनैं रँग ।।
मुख भरि नीर परस्पर डारतिं, सोभा अतिहिं अनूप बढ़ी तब ।।
मनहु चंद–गन सुधा गँडूपनि, डारति हैं आनंद भरे सब।।
आईं निकसि जानु कटि लौं सब, अंजुरिनि तैं लै लै जल डारतिं।
मानहु सूर कनक–वल्ली जुरि, अमृत बूँद पवन–मिस झारतिं।।

(घ) नौ लख गाय सुनी हम नन्द के तापर दूध दही न अघाने।
माँगत भीख फिरौ बन ही बन झूठि ही बातन के पन पाने।।
और की नारिन के मुख जोबत लाज गहौ कछु होहु सयाने।
जाहु भले जु चले घर जाहु चले बस जाउ वृंदावन जाने।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए : 15×3=45

(क) सगुण काव्यधारा के प्रमुख परिभाषिक शब्दों पर प्रकाश डालिए।

(ख) 'चंदायन' की प्रेम पद्धति का विवेचन कीजिए।

(ग) सूरदास के काव्य में अभिव्यक्त वात्सल्य और शृंगार का सोदाहरण विश्लेषण कीजिए।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए :** 5×3=15

(क) रसखान की रचनाएँ

(ख) सूफ़ी काव्य परंपरा

(ग) रविदास का निर्गुण काव्य में योगदान